Cognitive Thinking: An International Journal of Interdisciplinary Studies
Vol. 2, Issue-1 (January-March 2026), pp.117-123, ISSN: 3107-5088, www.cognitivethinking.in

शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत किशोर छात्र–छात्राओं की ई लर्निंग अभिरूचि – जनपद हरदोई के विशेष संदर्भ में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

1. वन्दना, शोधार्थी, शिक्षा संकाय
मेजर एस.डी. सिंह विश्वविद्यालय कानपुर रोड फतेहगढ़–फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश।
2. डॉ. सत्येन्द्र सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय
मेजर एस.डी. सिंह विश्वविद्यालय कानपुर रोड फतेहगढ़–फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश।

Article: Received: 10/03/2026, Returned: 20/03/2026, Accepted: 29/03/2026, Published:31/03/2026.
D.O.I. https://doi.org/10.5281/zenodo.19397222
© 2026 The Author(s). This is an Open Access article/ Journal distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are properly credited. (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

शोध सारांश : किशोरावस्था जीवन का एक महत्वपूर्ण चरण है, जिसमें शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास तेजी से होता है। इस आयु वर्ग के छात्र/छात्राओं को उपयुक्त शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, सुरक्षा और सामाजिक भागीदारी के अवसर प्रदान करना अत्यंत आवश्यक है। जनपद हरदोई, उत्तर प्रदेश का एक प्रमुख जिला है, जहां किशोरों की एक बड़ी संख्या निवास करती है। हालांकि, इस क्षेत्र में कई सामाजिक–आर्थिक चुनौतियां मौजूद हैं, जो उनके विकास और सशक्तिकरण में बाधा उत्पन्न करती हैं। किशोरावस्था एक संवेदनशील अवस्था होती है, जिसमें व्यक्ति शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से विकास करता है। किशोर छात्रों/छात्राओं का सशक्तिकरण केवल उनके व्यक्तिगत विकास के लिए ही नहीं, बल्कि समाज और देश की प्रगति के लिए भी आवश्यक है। आज की शिक्षा प्रणाली ने पारंपरिक शिक्षा प्रणाली को नया रूप देने वाले उपकरण के रूप में ई–अधिगम पर ध्यान केंद्रित किया है। संसार में तकनीकी परिवर्तन और डिजिटल शिक्षण के महत्व को देखते हुए, ई–लर्निंग (ऑनलाइन शिक्षा) ने उच्च शिक्षा संस्थानों में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। इस संदर्भ में छात्रों की ई–लर्निंग अभिरूचि एक महत्वपूर्ण शोध विषय है, जो इस बात पर ध्यान केंद्रित करेगा कि छात्र ई–लर्निंग के प्रति कितने उत्साहित है, इसके लाभ और चुनौतियां क्या है, और उनके शिक्षण के लिए क्या प्रभावी होते है।
मुख्य शब्दः– ई–लर्निंग, किशोर छात्र–छात्रा, विश्लेषण, व्यक्तित्व, सशक्तिकरण, किशोरावस्था, सशक्तिकरण, शिक्षा, इंटरनेट तकनीकी, शिक्षा प्रणाली, और अधिगम आदि।

प्रस्तावनाः देश में हो रहे राजनीतिक, आर्थिक, समाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों के कारण शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन आवश्यक है। आज की शिक्षा प्रणाली ने पारंपरिक शिक्षा प्रणाली को नया रूप देने वाले उपकरण के रूप में ई–अधिगम पर ध्यान केंद्रित किया है। आज भारतीय समाज में तथा उसकी संरचना में तीव्र बदलाव आया है। सामूहिक परिवारों के स्थान पर एकाकी परिवार स्थान ले रहे है, जातियों का बन्धन टूट रहा है, लिंग पर आधारित भेदभाव समाप्त हो रहा है। देश में सम्प्रदायिक सद्भाव को बढ़ाने की आवश्यकता का अनुभव किया जा रहा है, जिससे राष्ट्र को शोषण से बचाया जा सके। इसके लिए आज शिक्षा में नवीन प्रवृत्तियों तथा नूतन आयामों को अंगीकार किये जानें की विशेष आवश्यकता है। मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक छात्र की बुद्धि–लब्धि स्तर पृथक् होता है। इसलिए उसका शिक्षण पृथक् विधियों के अनुसार होना चाहिए। इससे प्रत्येक छात्र को लाभ पहुँचेगा।
इलेक्ट्रॉनिक अधिगम को ई–अधिगम, ऑन–लाइन अधिगम एवं कम्प्यूटर प्रोत्साहित अधिगम भी कहते है। ई–अधिगम को कई अर्थो में प्रयुक्त किया जाता है। इसका सम्बन्ध वृहद् अधिगम तकनीकी से अधिक है। ई–अधिगम में तकनीकी के साथ–साथ अन्य अधिगम विधियों को भी सम्मिलित किया जाता है, इसमें कम्प्यूटर नेटवर्क तथा बहुमाध्यम तकनीकी का उपयोग किया गया है। आज अनेक उच्च शिक्षा संस्थाओं में ऑन–लाइन अधिगम की व्यवस्था शुरू हो चुकी है।

ऑन–लाइन अधिगम शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह विद्यार्थियों को आधुनिक तकनीकी के साथ सीखने का अवसर प्रदान करता है। शोध अध्ययनों में यह पाया गया कि सामान्यतः सभी छात्र ई–अधिगम प्रणाली से संतुष्ट है। परम्परागत अधिगम प्रणाली की अपेक्षा ई–अधिगम प्रणाली अधिक प्रभावशाली और उपयोगी भी है। आज ऑनलाइन शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार अधिक तीव्रता से हो रहा है। शोध अध्ययन की सुविधा नियमित संस्थाओं तथा मुक्त विश्वविद्यालयो द्वारा दी जाने लगी है। समुदाय अधिगम को मूल अधिगम प्रतिमान प्रदान करता है। संचार माध्यमों को ई–अधिगम के लिए समुदायों से भी सम्बद्ध किया जा रहा है। कक्षा शिक्षण के स्तर को तकनीकी के उपयोग से पूर्णतः परिवर्तित किया जा सकता है। आज की परिस्थितियों में अधिगम के लिए कक्षाओं में अनेक नवीन क्रियाओं तथा संसाधनों की आवश्यकता है।

ई–अधिगम एक व्यापक प्रत्यय है। कम्प्यूटर में इंटरनेट द्वारा इस प्रकार के अधिगम को सम्पादित किया है। इस अधिगम का संचार नेटवर्क के माध्यम से भी सभी वर्गों एवं सभी संस्थाओं के लिए किया जाता है। यह अधिगम प्रणाली शिक्षा की वैकल्पिक प्रणाली नही है अपितु नवीन शिक्षा प्रणाली है जों सभी को शिक्षा के या अधिगम के अवसर प्रदान करती है। यह उच्च शिक्षा की एक मितव्ययी शिक्षा प्रणाली है। इसके द्वारा पाठ्यवस्तु का स्वामित्व विकसित किया जाता है। इसकी प्रभावशाली परंपरागत शिक्षा के समान नही होती है। इसका अनुदेशात्मक प्रारूप अपने में पूर्ण होता है, क्योकि इसमें वर्षों शिक्षण सिद्धांतों का उपयोग हुआ होता है। इसका उपयोग दूरवर्ती शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, सत्र शिक्षा तथा व्यावसायिक शिक्षा में विश्व के अनेक देशों में किया जाने लगा है। ऑनलाइन अधिगम, दूरवर्ती शिक्षा, तकनीक आधारित प्रशिक्षण, वेब आधारित प्रशिक्षण, दूरवर्ती अधिगम, कम्प्यूटर आधारित प्रशिक्षण भी अधिगम से संबंधित है और इन्हे भी अधिगम में सम्मिलित किया गया है। ई–अधिगम से (जिसे तकनीकी शब्दावली में सम्मिलित किया गया है) स्थानीय समुदाय तथा भूमंडलीय समुदाय को अधिगम का अवसर मिलता है। ई–अधिगम द्वारा अभिसूचना संप्रेषण की सहायता से शिक्षण तथा प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। इसमें प्रशिक्षण की क्रियाएं छात्र की अधिगम एवं प्रशिक्षण प्रक्रियांओं का उल्लेख नही किया जाता है, बल्कि छात्र की आवश्यकताओं के अनूरूप ज्ञान तथा कौशल उत्तम ढ़ग से प्रदान किया जाता है। ई–अधिगम में इंटरनेट प्रणाली का उपयोग किया जाता है। इंटरनेट तकनीकी से पाठ्यवस्तु का संचार किया जाता है, जिससे ज्ञान में वृद्धि होती है।

पृष्ठभूमिः वर्तमान समय में ई–लर्निंग या ऑनलाइन शिक्षा ने पारंपरिक शिक्षा पद्धतियों को चुनौती दी है और विद्यार्थियों के लिए शिक्षा के नये द्वार खोले है। खासकर उच्च शिक्षा संस्थानों में जहां छात्र अपनी पढ़ाई में गहरी समझ और विश्लेषणात्मक कौशल विकसित करने के लिए विभिन्न स्त्रोतों का उपयोग करते है। शिक्षा के क्षेत्र में ई–लर्निंग ने आज एक प्रमुख भूमिका निभाई है। हालांकि छोटे शहरों और कस्बों में जैसे कि जनपद हरदोई में यह शिक्षा पद्धति कितनी प्रभावी है और छात्रों की इसमें क्या रूचि है, यह एक महत्वपूर्ण शोध का विषय है।

साहित्य समीक्षाः प्रस्तुत शोध प्रस्ताव में प्रासंगिक अध्ययनों की समीक्षा प्रस्तुत की जा रही है, जो वर्तमान सामाजिक एवं शैक्षिक परिवर्तन, संगठनात्मक संस्कृति, एवं सामाजिक–आर्थिक मानदंडों पर आधारित है। अध्ययन में सामाजिक–शैक्षिक मानदंडों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इस खंड में पिछले शोधों का विश्लेषण किया जाएगा जो ई–लर्निंग, तकनीकी शिक्षा, और उच्च शिक्षा संस्थानों में ऑनलाइन शिक्षण विधियों पर आधारित है। इसमें यह देखा जाएगा कि छात्रों की ई–लर्निंग में रूचि के कारक कौन से है? विद्यार्थियों का अनुभव क्या रहा है? और छात्र और शिक्षक के दृष्टिकोण में क्या अंतर है? प्रस्तुत अध्ययन में सामाजिक–शैक्षिक मानदंडों में उभरे विषय व्यक्तिगत व्यक्तित्व, बातचीत, सहयोग, टीमवर्क, एवं समर्थन के साथ–साथ एक शिक्षक का नेतृत्व आदि शामिल है। उच्च शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत् छात्रों की ई–लर्निंग अभिरूचि पर विशेषकर हरदोई जनपद के संदर्भ में विशिष्ट साहित्य की उपलब्धता सीमित है। हालांकि, ई–लर्निंग और उच्च शिक्षा में आईसीटी (सूचना एवं संचार प्रौद्यौगिकी) के उपयोग पर कुछ व्यापक अध्ययन उपलब्ध है जों इस विषय की समझ को समृद्ध कर सकते है। साहित्य समीक्षा निम्नवत् हैः

भारत में शिक्षा गुणवत्ताः ''चुनौतियाँ और समाधान'' शीर्षक से एक लेख में उच्च शिक्षा में आईसीटी के उपयोग और ई–लार्निंग सामग्री की सुलभता पर चर्चा की गई है। इसमें राष्ट्रीय शिक्षा मिशन के तहत उच्च शैक्षिक संस्थानों में आईसीटी के माध्यम से शिक्षण और अध्ययन प्रक्रिया को सुदृढ़ करने के प्रयासों का उल्लेख है।

उच्च शिक्षा में ऑनलाइन शिक्षण का प्रभाव एवं चुनौतियांः शाह डॉ आभा International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI) ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714 www.ijhssi.org ||Volume 12 Issue 1 January. 2023 || PP. 108-111

एलएमएस प्रशिक्षा/शिक्षा वितरण, मार्गन एवं प्रबंधन सॉफ्टवेयर है। ये एलएमएस प्रशिक्षा/शैक्षिक रिकॉर्ड प्रबंधन सॉफ्टवेयर से लेकर इंटरनेट पर पाठ्यक्रम का वितरण करने वाले एवं ऑनलाइन सहयोग की सुविधा प्रदान करने वाले सॉफ्टवेयर के रूप मे पाए जाते है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एन0ई0पी0 2020): यह नीति उच्च शिक्षा में डिजिटल शिक्षा और ई–लार्निंग को बढ़ावा देने पर विशेष जोर देती है। नीति में क्षेत्रीय भाषाओं में पाठ्यक्रम विकास, समावेशी शिक्षा, और डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता पर बल दिया गया है, जो छात्रों की ई–लर्निंग में रूचि को प्रभावित कर सकते है। दृष्टि आई0ए0एस0 & https://www.education.gov.in/sites

समस्या का चयनः

पाठ्यक्रम में गुणवत्ता सुधार की आवश्यकता और वर्तमान सदी में योग्य कौशलपूर्ण छात्रों को तैयार करने की इच्छा ने शिक्षा के संदर्भ में उच्च शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत छात्रों की ई–लार्निंग अभिरूचि पर मुख्य जोर दिया है। इसलिए, उक्त का समर्थन करने वाली स्कूल संस्कृतियों को व्यापक रूप से विकसित और प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। हालांकि, शिक्षा के संदर्भ मे ई–लर्निंग पर अध्ययन अभी भी दुर्लभ है। शोधकर्ताओं को शिक्षा सेटिंग्स के भीतर ई–लर्निंग प्रणाली एवं इसकी विशेषताओं पर सार्वभौमिक रूप से सहमत होना अभी बाकी है। इस प्रकार, शैक्षिक परिद्रश्य में साझा मानदंडों, विश्वास, मूल्यों, रीति–रिवाजों और व्यवहारों की पहचान करने के लिए यह व्यवस्थित शोध आवश्यक है।

समस्या का प्रक्कथनः

संसार में तकनीकी परिवर्तन और डिजिटल शिक्षण के महत्व को देखते हुए, ई–लर्निंग (ऑनलाइन शिक्षा) ने उच्च शिक्षा संस्थानों में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। इस संदर्भ में छात्रों की ई–लर्निंग अभिरूचि एक महत्वपूर्ण शोध विषय है, जो इस बात पर ध्यान केंद्रित करेगा कि छात्र ई–लर्निंग के प्रति कितने उत्साहित है, इसके लाभ और चुनौतियां क्या है, और उनके शिक्षण के लिए क्या प्रभावी होते है ।आज डिजिटल युग मे, शिक्षा के तरीके में एक बड़े बदलाव ने ऑनलाइन शिक्षा (ई–लर्निंग) को महत्वपूर्ण बना दिया है। यह विशेष रूप से उच्च शिक्षा संस्थानो में छात्रों के लिए एक नई दिशा प्रदान करता है, जिसमें तकनीकी संसाधनों के माध्यम से उन्हे शैक्षिक सामग्री आसानी से उपलब्ध होती है। हालांकि, ई–लर्निंग के इस बढ़ते प्रभाव के बावजूद, कई चुनौतियां सामने आती है, जिनकी पहचान और समाधान करना अत्यंत आवश्यक है। भारत के विभिन्न हिस्सों में, जैसे कि हरदोई जैसे छोटे शहरों और कस्बों में, छात्रों की ई–लर्निंग के प्रति रूचि और अनुभव पर कई जटिल सवाल खड़े होते है। यहां के उच्च शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत छात्रों के लिए, ई–लर्निंग का अनुभव सिर्फ एक शैक्षिक आवश्यकता ही नही, बल्कि एक चुनौती भी हो सकता है। इस संदर्भ में निम्नलिखित समस्याएँ सामने आती हैः

(i)तकनीकी संसाधनों की कमीः जनपद हरदोई के ग्रामीण क्षेत्रों में, जहां इंटरनेट कनेक्टिविटी की समस्या और डिजिटल उपकरणों की कमी एक सामान्य बात है, विद्यार्थी ई–लर्निंग के पूर्ण लाभ को प्राप्त करने में सक्षम नही होतें। इंटरनेट स्पीड की समस्या और स्मार्टफोन या कम्प्यूटर जैसी आवश्यक तकनीकी सुविधाओं का आभाव छात्रों की ई–लर्निंग अभिरूचि पर नकारात्मक प्रभाव डालता है।

(ii) साक्षरता और डिजिटल ज्ञान की कमीः अधिकतर ग्रामीण क्षेत्रों में छात्रों के पास डिजिटल साक्षरता का अभाव होता है। बहुत से छात्र ई–लर्निंग के उपकरणों और प्लेटफार्मों का सही उपयोंग नही कर पाते, जिसके कारण वे सही तरीके से अध्ययन नही कर पाते। छात्रों में डिजिटल उपकरणों के उपयोग के बारे में आवश्यक ज्ञान और कौशल की कमी एक बड़ी समस्या है।

(iii) पारंपरिक शिक्षा प्रणाली की प्राथमिकताः बहुत से छात्र और शिक्षक पारंपरिक शिक्षा प्रणाली को अधिक प्रभावी मानते है। वे मानते है कि कक्षा में व्यक्तिगत संपर्क और शिक्षकों द्वारा दिया गया मार्गदर्शन ही सर्वोत्तम है। इस मानसिकता के कारण, छात्र ई–लर्निंग को अपने अध्ययन के लिए आदर्श माध्यम नही मानते और इसे अपनाने में हिचकिचाते है।

(iv) समय और आत्म–प्रेरणा की कमीः ई–लर्निंग में छात्रों को स्व–अधिगम (Self-learning) की आवश्यकता होती है। लेकिन बहुत से छात्र समय प्रबंधन में कठिनाई महसूस करते है और उनका आत्म–प्रेरणा (Self-motivation) का

स्तर भी कम हो सकता है। बिना किसी बाहरी दबाव या समय सीमा के, छात्रों के लिए ऑनलाइन पाठ्यक्रमों को नियमित रूप से पूरा करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

(v) समाज और परिवार का दबाव: कुछ छात्र और उनके परिवारों के लिए पारंपरिक शिक्षा प्रणाली अधिक स्वीकार्य और विश्वसनीय है। ग्रामीण और छोटे शहरों में, जहाँ पारिवारिक दबाव और सामाजिक संरचनाएँ मजबूत होती है, वहां ई–लर्निंग के लिए मानसिकता में बदलाव लाना कठिन हो सकता है।

6.परिकल्पना:

ई–अधिगम शिक्षा का एक नवीन प्रत्यय है। इसके अंतर्गत इंटरनेट तकनीकी का उपयोग वस्तु के प्रस्तुतीकरण एवं संचार में किया जाता है। इस तकनीकी सहायता से अधिगम के लिए अनुकूल वातावरण को शिक्षकों तथा छात्रों हेतु उत्पन्न किया जाता है। समाज तथा समुदाय को अधिगम सुविधा प्रदान करती है। यह अधिगम से पूर्णतः भिन्न है। यह अधिगम की नवीन व्यवस्था है। इसकी प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें पाठ्यक्रम का प्रस्तुतीकरण एवं संचार कम्प्यूटर इंटरनेट प्रणाली से किया जाता है। इसमें अधिगम वातावरण छात्र केंद्रित होता है, जबकि परंपरागत शिक्षण में अधिगम वातावरण शिक्षक के अनुरूप होता है। शिक्षा का यह नवीन प्रत्यय, जन–जीवन, समाज, एवं शिक्षा हेतु समुचित वातावरण का सृजन करेगा तथा समाज को वास्तविक अधिगम के अवसर प्रदान करेगा। इस शोध प्रबंध से वर्तमान सामाजिक और शैक्षिक परिवर्तन में ई–लर्निंग की भूमिका, उपयोगिता एवं उपयोग को बढ़ावा मिलेगा। हरदोई जनपद में उच्च शिक्षा छात्रों की ई–लर्निंग अभिरूचि पर विशिष्ट डेटा या अध्ययन की कमी है। इस क्षेत्र में अनुसंधान की आवश्यकता है ताकि स्थानीय छात्रों की ई–लर्निंग में रूचि और चुनौतियों को समझा जा सकें। इस शोध से विभिन्न शैक्षिक संस्थानों में शिक्षक शिक्षा में ई–लर्निंग की उपयोगिता सिद्ध होगी। यह शोध ई–लर्निंग के विभिन्न उपायों की सार्थकता सिद्धि में सहायक होगा।

शोध की आवश्यकता एवं सार्थकता : हरदोई जनपद में ई–लर्निंग के प्रति विद्यार्थियों की विशिष्ट अभिरूचि पर डेटा की कमी को देखते हुए स्थानीय उच्च शिक्षा संस्थानों में इस विषय पर अनुसंधान और सर्वेक्षण की आवश्यकता है। इससे क्षेत्रीय विद्यार्थियों की ई–लर्निंग में रूचि, चुनौतियों, और अवसरों के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की जा सकेगी, जो भविष्य की शैक्षिक नीतियों और कार्यक्रमों के विकास में सहायक होगी। ई–लर्निंग, यानी ऑनलाइन शिक्षा, एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें छात्रों को डिजिटल प्लेटफॉर्मों के माध्यम से शिक्षा प्राप्त की जाती है। यह पारंपरिक कक्षा शिक्षण के मुकाबले एक नवीन और आधुनिक तरीका है, जो छात्रों को अपनी रूचि से अध्ययन करने का अवसर प्रदान करता है। उच्च शिक्षा में इसका उपयोग बढ़ता जा रहा है। इसकी सार्थकता को लेकर कई पहलुओं पर चर्चा की जा सकती है। आज के डिजिटल युग में तकनीकी प्रगति ने शिक्षा के क्षेत्र में एक नया मोड़ लाया है। उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों को अपनी शैक्षिक यात्रा को पूरी तरह से डिजिटल रूप से अपनाने की आवश्यकता है ताकि वे भविष्य के लिए तैयार हो सकें। ई–लर्निंग के माध्यम से उच्च शिक्षा संस्थान दुनियाभर के विद्यार्थियों तक पहुंच बना सकते है। इससे उन स्थानीय विद्यार्थियों को भी लाभ होता है, जिनके पास गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के अवसर कम होते है। ई–लर्निंग छात्रों को अपनी सुविधा के अनुसार किसी भी समय और स्थान से अध्ययन करने का मौका देता है। यह खासकर उन विद्यार्थियों के लिए सहायक है, जिनके पास पूर्णकालिक अध्ययन करने का समय नही होता या जो विभिन्न कारणों से प्रत्यक्ष रूप से कक्षा में उपस्थित नही हो सकते। ई–लर्निंग के माध्यम से विद्यार्थियों के स्व–अधिगम की दिशा में मार्गदर्शन मिलता है। वे अपनी पसंद के अनुसार अध्ययन कर सकते है, जिससे उनकी स्वयत्ता और आत्मनिर्भर करने में मदद करेगा। ऑनलाइन शिक्षा प्लेटफॉर्म पर छात्रों के लिए विभिन्न प्रकार के शैक्षिक संसाधन जैसे विडियों लेक्चर, पॉडकास्ट, इंटरएक्टिव कोर्स और ऑनलाइन परीक्षण उपलब्ध होतें है। इन संसाधनों का उपयोग कर छात्र अपनी शैक्षिक समझ को बेहतर बना सकते है। ई–लर्निंग के माध्यम से हर छात्र को अपनी मति और समझ के अनुसार शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलता है। इसमें शिक्षक और छात्र के बीच संपर्क केवल एक बटन दबाने पर होता है, जिससे छात्रों को अपनी शैक्षिक जरूरतों के अनुसार अधिक लचीलेपन और कस्टमाइजेशन की सुविधा मिलती है। ऑनलाइन शिक्षा के कारण, छात्रों को वैश्विक स्तर पर अन्य छात्रों से प्रतिस्पर्धा करने का मौका मिलता है। वे विभिन्न देशों और सस्कृतियों के छात्र के साथ संवाद और सहयोग प्राप्त कर सकते है, जिससे उनका दृष्टिकोण और ज्ञान बढ़ता है। उच्च शिक्षा में ई–लर्निंग की आवश्कता और सार्थकता दोनों ही अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह न केवल छात्रों के लिए शिक्षा को अधिक सुलभ बनाता है, बल्कि उन्हे वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनने के लिए तैयार करता है। ई–लर्निंग के माध्यम से शिक्षा में लचीलापन स्व–अधिगम और व्यक्तिगत अनुभव की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति संभव है। उच्च शिक्षा संस्थानों को इस दिशा में और अधिक नवाचारों और सुधारों को लागू करना चाहिए ताकि वे छात्रों की शैक्षिक यात्रा को और भी प्रभावी बना सकें।

उद्देश्यः

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य यह समझना है कि उच्च शिक्षा संस्थानों मे पढ़ाई कर रहे छात्रों की ई–लर्निंग प्रणाली के प्रति क्या अभिरूचि है, और वे इस प्रणाली को किस हद तक अपनाते है। इस अध्ययन में यह भी देखा जाएगा कि ई–लर्निंग के लाभ और इसकी चुनौतियां छात्रों के दृष्टिकोण और मानसिकता, ऑनलाइन शिक्षण विधियों में छात्रों के अनुभव, ई–लर्निंग के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने के लाभ, छात्रों को ई–लर्निंग में होने वाली प्रमुख कठिनाइयाँ आदि शोध के उद्देश्यों में शामिल है।

इस शोध का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि जनपद हरदोई के उच्च शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं की ई–लर्निंग के प्रति अभिरूचि कैसी है। हरदोई जिले में उच्च शिक्षा संस्थानों में छात्रों की ई–लर्निंग के प्रति अभिरूचि का मुल्यांकन करना, छात्रों के द्वारा ई–लर्निंग की उपयोगिता और सुलभता पर विचार, ई–लर्निंग के दौरान छात्रों को होने वाली समस्याओं (जैसें इंटरनेट कनेक्टिविटी, तकनीकी समस्याएँ, डिजिटल साक्षरता की कमी) का विश्लेषण करना, छात्रों के दृष्टिकोण और अभिप्रेरणा को समझना, और यह जानना कि क्या वे पारंपरिक शिक्षा को ई–लर्निंग से अधिक लाभकारी मानते है या नही। इसके अलावा, यह भी जानना कि वे किस हद तक ई–लर्निंग को पारंपरिक कक्षा शिक्षा के मुकाबले अधिक प्रभावी मानते है, और क्या इसके प्रयोग में कोई तकनीकी या अन्य समस्याएँ संभावी है।

शोध के प्रमुख प्रश्नः

जनपद हरदोई के उच्च शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत छात्रों की ई–लर्निंग के प्रति अभिरूचि क्या है?
छात्रों का ई–लर्निंग में किन–किन तकनीकी समस्याओं का सामना करना होगा?
क्या छात्र ई–लर्निंग को पारंपरिक कक्षा शिक्षण के मुकाबले अधिक प्रभावी मानते हैं ?
क्या छात्रों के लिए ई–लर्निंग में शामिल संसाधनों की पर्याप्तता है?
छात्रों को ई–लर्निंग के दौरान आत्म–प्रेरणा और समय प्रबंधन में किस प्रकार की समस्याएँ होती है?

शोध विधि (Methodology) :

सर्वेक्षण (Survey): हरदोई जनपद के विभिन्न उच्च शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत छात्रों का एक विस्तृत सर्वेक्षण किया जाएगा, जिसमें छात्रों से उनकी ई–लर्निंग के बारे में राय ली जाएगी। सर्वे में प्रश्नपत्र का उपयोग किया जाएगा, जिसमें विभिन्न आयामों पर सवाल होंगे–जैसे तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता, समय प्रबंधन, आत्म–प्रेरणा, और ई–लर्निंग के प्रति रूचि।

साक्षात्कार (Interviews): कुछ चयनित छात्रों और शिक्षकगण से साक्षात्कार किया जाएगा ताकि उनकी ई–लर्निंग के प्रति मानसिकता और अनुभव को और गहराई से समझा जा सके।

समाजिक और सांस्कृतिक विश्लेषणः स्थानीय सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ में ई–लर्निंग के प्रभाव का समझने के लिए क्षेत्रीय संदर्भ में भी अध्ययन किया जाएगा, ताकि पता चल सके कि यहां के छात्रों के लिए ई–लर्निंग कितनी सुलभ और स्वीकार्य है।

गुणात्मक और मात्रात्मक विश्लेषणः इस शोध में दोनों प्रकार के डेटा का उपयोग किया जाएगा–गुणात्मक (जो छात्रों के अनुभवों और राय पर आधारित होगा) और मात्रात्मक (जो आंकड़ो के रूप में होगा) इस शोध के लिए उपरोक्त विधियों का उपयोग किया जाएगा है, जिसमें छात्रों से विभिन्न प्रश्नों के माध्यम से जानकारी प्राप्त की जाएगी। डेटा संग्रह के लिए ऑनलाइन प्रश्नावली का उपयोग किया जाएगा। प्रश्नावली में निम्नलिखित प्रमुख बिंदु शामिल हो सकते हैः

छात्रों के ई–लर्निंग अनुभव
छात्रों की तकनीकी क्षमता
ई–लर्निंग के प्रति छात्रों का दृष्टिकोण (सकारात्मक/नकारात्मक)

समस्या का समाधानः

इस समस्या के समाधान के लिए, छात्रों को बेहतर तकनीकी संसाधन, डिजिटल कौशल की शिक्षा, और नियमित ई–लर्निंग कार्यशालाएँ प्रदान की जानी चाहिए। साथ ही, शिक्षा संस्थानों को पारंपरिक और ऑनलाइन शिक्षा के बीच संतुलन

स्थापित करना होगा। इस अध्ययन का उद्देश्य हरदोई के उच्च शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत छात्रों की ई–लर्निंग अभिरूचि की समझ प्राप्त करना है और यह जानना है कि किस प्रकार से इन समस्याओं को सुलझाया जा सकता है, ताकि ई–लर्निंग का प्रभावी उपयोग संभव हो सके। इस अध्ययन के माध्यम से यह भी समझा जाएगा कि कैसे ई–लर्निंग के माध्यम से छात्रों के शैक्षिक अनुभव को बेहतर बनाया जा सकता है और इस प्रणाली के लिए उनकी अभिरूचि को बढ़ाया जा सकता है।

शोध क्षेत्र और समय सीमा:

शोध क्षेत्र: उच्च शिक्षा संस्थान (विश्वविद्यालय, कॉलेज)

समय सीमा: 6 महीने (डेटा संग्रहण, विश्लेषण और रिपोर्ट लेखन के लिए)

शोध के अपेक्षित परिणाम एवं विमर्श:

ई–लर्निंग की स्वीकार्यता: यह शोध यह स्पष्ट करेगा कि हरदोई जनपद के उच्च शिक्षा संस्थानों में छात्रों द्वारा ई–लर्निंग को कितना पसंद किया जाता है, और इसके प्रति उनकी क्या अभिरूचि है।

तकनीकी समस्याओं का समाधान: छात्रों द्वारा सामना की जाने वाली तकनीकी समस्याओं और उनके समाधान के उपायों का निर्धारण किया जाएगा, ताकि भविष्य में इस दिशा में सुधार किया जा सके।

शैक्षिक सफलता का मूल्यांकन: ई–लर्निंग के माध्यम से छात्रों की शैक्षिक सफलता और आत्म–प्रेरणा पर इसके प्रभाव का मूल्यांकन किया जाएगा, ताकि यह समझा जा सके कि ई–लर्निंग उन्हे कितना सशक्त और प्रेरित करता है।

इस अध्ययन से यह जानकारी प्राप्त हो सकेगी कि छात्रों में ई–लर्निंग के प्रति सकारात्मक या नकारात्मक प्रवृत्तियाँ है, और इसके माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने के लिए किन कारकों का प्रभाव सबसे अधिक है। यह भी स्पष्ट होगा कि क्या तकनीकी ज्ञान और ऑनलाइन प्लेटफॉर्मों की उपलब्धता छात्रों के लिए ई–लर्निंग के उपयोग में सहायक है या नही।

निष्कर्ष:

शोध का निष्कर्ष छात्रों की ई–लर्निंग के प्रति अभिरूचि के बारे में व्यावहारिक जानकारी प्रदान करेगा। इस शोध से प्राप्त जानकारी हरदोई जैसे छोटे शहरों के उच्च शिक्षा संस्थानों में छात्र के लिए ई–लर्निंग को प्रभावी बनाने के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। यह शोध न केवल छात्रों की अभिरूचि को समझेगा, बल्कि शिक्षा नीति निर्माताओं और संस्थानों के लिए महत्वपूर्ण दिशा–निर्देश भी प्रदान करेगा, ताकि वे बेहतर ई–लर्निंग अनुभव प्रदान कर सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

प्राथमिक स्रोत:

1 चौधरी, पी. शोध पद्धतिः शैक्षिक अनुसंधान की आधारशिला । यूनिवर्सिटी प्रेस, 2020.

4 कुमार, एस. शैक्षिक उपलब्धि और व्यक्तित्व विकास । नेशनल बुक ट्रस्ट, 2021.

3. शाह डॉ आभा, उच्च शिक्षा में ऑनलाइन शिक्षण का प्रभाव एवं चुनौतियां। International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI) ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714 www.ijhssi.org ||Volume 12 Issue 1 January. 2023 || PP. 108-111

द्वितीयक स्रोत:

शोध पत्रों एवं लेखों का संदर्भ:

1 अग्रवाल, एम. शैक्षणिक उपलब्धि एवं मानसिक विकास में सहसंबंध शिक्षा एव ंमनोविज्ञान शोध जर्नल, खंड 12, संख्या 2, 2021, पृ. 78–92.

2 गुप्ता, एल. संज्ञानात्मक क्षमताएं और उपलब्धि स्तरः सरकारी बनाम निजी विद्यालयों की तुलना मनोवैज्ञानिक अध्ययन पत्रिका, खंड 18, संख्या 2, 2022, पृ. 99–112.

3 शर्मा, वी. किशोरों के व्यक्तित्व एवं बुद्धि स्तर का तुलनात्मक अध्ययन भारतीय शैक्षणिक शोध पत्रिका, खंड 25, संख्या 3, 2019, पृ. 45–60.

4 वर्मा, के., और पटेल, आर. किशोरों में व्यक्तित्व विशेषताओं और शैक्षिक सफलता का तुलनात्मक अध्ययन अंतरराष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका, खंड 30, संख्या 5, 2020, पृ. 123–138.

ऑनलाइन स्रोत (Online Sources):

1 राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT)। शैक्षिक मनोविज्ञान और छात्र विकास" NCERT, 2021, www.ncert-nic-in
2 विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO)। किशोरों का संज्ञानात्मक विकास और शिक्षा" WHO, 2020, www-who-int.
3 विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC)। उच्च शिक्षा और छात्र बुद्धि विश्लेषण UGC, 2022, www-ugc-ac-in

सरकारी रिपोर्ट एवं दस्तावेजः

1 मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 – शैक्षिक मनोविज्ञान का दृष्टिकोण । भारत सरकार, 2019.
2 विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) । छात्र उपलब्धि और बुद्धि स्तर पर उच्च शिक्षा रिपोर्ट । यूजीसी प्रकाशन, 2021.
3. ''भारत में शिक्षा गुणवत्ता चुनौतियाँ और समाधान'' शीर्षक से एक लेख में उच्च शिक्षा में आईसीटी के उपयोग और ई–लार्निंग सामग्री की सुलभता पर चर्चा की गई है। इसमें राष्ट्रीय शिक्षा मिशन के तहत उच्च शैक्षिक संस्थानों में आईसीटी के माध्यम से शिक्षण और अध्ययन प्रक्रिया को सुदृढ़ करने के प्रयासों का उल्लेख है।
4.एलएमएस प्रशिक्षा/शिक्षा वितरण, मार्गन एवं प्रबंधन सॉफ्टवेयर है। ये एलएमएस प्रशिक्षा/शैक्षिक रिकॉर्ड प्रबंधन सॉफ्टवेयर से लेकर इंटरनेट पर पाठ्यक्रम का वितरण करने वाले एवं ऑनलाइन सहयोग की सुविधा प्रदान करने वाले सॉफ्टवेयर के रूप मे पाए जाते है।
5.राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एन0ई0पी0 2020): यह नीति उच्च शिक्षा में डिजिटल शिक्षा और ई–लार्निंग को बढ़ावा देने पर विशेष जोर देती है। नीति में क्षेत्रीय भाषाओं में पाठ्यक्रम विकास, समावेशी शिक्षा, और डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता पर बल दिया गया है, जो छात्रों की ई–लर्निंग में रूचि को प्रभावित कर सकते है। दृष्टि आई0ए0एस0 & https://www.education.gov.in/sites

---

Declaration by Author (s): *"I hereby declare that this manuscript is my original work, free from plagiarism, and that all sources and any use of Artificial Intelligence tools for content generation or editing have been fully disclosed and verified for accuracy."* **वन्दना** और **डॉ. सत्येन्द्र सिंह**